

यगावतार

कार क एक्सीलटर पर पाव रखत ही मयक भल जाता था कि वा जमीन पर ह। उसक ख्याल आसमानी रग भरन लगत थ। वा उन रगा म खा जाता था। यही सब ता चाहा था उसन। अपन पास एक बढिया कार हा आर पाव क नीच अमरिका की जमीन हा। हाई व पर स्पीडिंग मना थी पर वा कई वार वपरवाह हा जाता था। वा भविश्य क सपन नही वनताथा वा ता अतीत म गात मारन लगताथा। स्वय का गर्वित सिहासन पर बठाकर स्वय ही पशसक वन जाताथा। माटी स उठकर स्वय क वलवत पर महल निर्मित कियाथा उसन।

दिल्ली क पहाडगज क मल्लानीढाड की गली न पाच म एक कमर म उसका सारा परिवार कहन का रहता था। वस उनका उठना बठना साना जागना ता गली म ही चलताथा। वहा सारा दिन शार शरावा चिल्लपा मची रहती थी। सरकारी स्कल स घर लाटकर सभी वच्च गली म बठकर तखती साफ करत उस पर मल्लानी मिटदी मलत थ। तरक्ती सखन का रखकर सारा हमउम टाला पिहली सडक लाघ कर विडलामदिर की आर दाड पडताथा। वहा क वाग वगीचा म फला क इर्द गिर्द मडराती तितलिया पकडना झल झलना आर घम फिरकर वापिस आ जाना। वचपन की इन मीठी यादा न कभी भी मयक का पीछा नही छाडा था। छोट स घर म रहत हए भी उसनअपन लिए वचपन क मधर स्वपन सजा लिए थ। अपन वाल्यकाल का खला स वचित नही रखा था।

भीषण गर्मिया म ल स तपी गर्म हवाआ क कारण परखी झलत हए सारी रात कटती थी। वा भी गली म विछी चारपाइया पर। दीवारा पर कील गाड कर उस कील स सब अपनी अपनी चारपाई बाध दत थ जिसस रात का उनकी जगह न छिन जाए। मजाल था कि कोई नई चारपाई वहा जगह पा जाती। एक वार नक्कड की वागडी वन्ता न पिछल माड पर अपन बट व नई वह का भीतर सलान की खातिर वाहर चारपाई विछा ली अपन लिए ता पछा न क्या गलिया भरी रात चली थी। मयक धीरन वीरू कक्क आर पाली की टाली न ता वहत आनन्द लटा था। आज भी उस रात का याद कर वा स्वय ही एकात म भी मस्करा उठता था।

गलिया की सरकारी बलिया ता तमाम रात जलती थी। एक एक आहात म पाच छः कमर नीच व दूसरी मजिल पर भी उतन ही परिवार बस थ। ऊपर वाल अपनी छत पर जमीन पर विस्तर लगा कर सात थ। अमावस की अधरी राता म आधी रात का कान कहा साता था कोई नही जान पाता था। जब कभी आधी रात का प्यास लगन पर भीतर जाना हाता था ता परखा की घर घर म चारपाइया क हिलन खरीटा की आवाज साथ ही चडिया की खनक मिली हाती थी। मयक का जवान मन इन आवाजा म रस पान लगता था। कछ दख सकन की ललक म वा वही खड रहकर मटक स चार पाच गिलास पानी पीता रहता। इस वीच वा पाली क भाई भाभी का हिलत जलत भी दखता था। एक वार ता पानी पीन क बाद वा वही दीवार की आट म अधर म लट ही गया था। चारी चारी उनकी परी रासलीला दख कर उनक सान क उपरात चपक स गले म जाकर अपन विस्तर पर दक्ककर वाकि की सारी रात वा ख्याला म खयाया वारहा था। तभी उस लगा था उसका वदन भी तप रहा था। वा भी अब जवान हा गया था। फिर न जान कव भार क तार क आझल हान क पश्चात् धप चढ तक वा गली क शार म भी साया रहा था।

विडला मदिर क रास्त म रल्व क्वार्टर्स आत थ वहा स भी वहत वच्च मदिर म खलनआत थ। उन्ही म थी भर वाल कथा तक विखराए प्यारी सी झनक। एक वार सडक पार करत हए एक तज आती कार स उस वचाकर खीच ही लिया था मयक न। तभी स वा उसक शरीर का स्पर्श भला नही था। नाम पता भी पछा था व व सभी उस घर तक छड कर आए थ माना उन्हान कोई मांचा जीत लिया था। उसक पिताजी रल्व क मन आफिस वडादा हाऊस म कर्लक थ। अब झनक भी कली स फल वन चली थी। स्कर्ट की जगह सलवार कमीज न ल ली थी। झनक की एक झलक पान क लिए मयक क पाव हर रात उसी रास्त का नापत थ। कई वार उनका आमना सामना हा जाता था। दाना ही एक दसर का दखत ही झप जात थ। उधर झनक का भी मयक का पतिक्षण इतजार रहन लगा। मयक की अर्थभरी आखा का पभाव झनक क गलावी पडत चहर पर स्पष्ट वृष्टिगाचर हान लगा था। एक रात दाना न लज्जा का बाध ताडकर पम का इजहार कर ही डाला फिर ता पम की पीग चढती चली गई थी।

झनक का पर्णरूपण अपनान की इच्छा मयक का कछ वनन की आर परित कर रही थी। वी काम की परीक्षा पथम डिवीजन म उत्तीण करक उसन उल्साह पर्वक नाकरी क आवदनपत्र भजन आरम्भ कर दिए थ। उन्ही दिना धीरन क मासाजी न उस अमरिका वलाया ता मयक क मन म भी अमरिका जान की लालसा जागृत हई। धीरन का एक्वसी का काम वीजा टिकट वगरह करवान म मयक हर पल उसक साथ था। न जान कस ख्याल आया कि मयक न भी टरिस्ट वीजा क लिए फार्म भर दिया आर उसक आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब उस किस्मत क धनी का भी छः महीन का वीजा मिल गयाथा।

दास्ता की टाली न ता जश्न मनाया कि मयक की लाटरी लग गई पर घर म सब का साप सघ गया कि टिकट क पस कहा स आएण। अब ता चार पस कमाकर परिवार क खर्च म हाथ बटान का समय आया था आर य जनाव विलायत भाग चल थ। पाकिस्तान स घरवार लटाकर मयक क दादाजी का रिफ्यजी हान पर यह एक कमरा सिर ढाकन का मिला था। दा वटा का लकर व दिल्ली पहच थ। चाचाजी ता नाकरी लगन पर नहरूनगर जाकर रहन लग थ मयक क पिताजी अपन परिवार क साथ यही रह गय थ। पहाडगज म फला की दकान थी उनकी। वच्च पढाई म अच्छ थ यही बात उनकी सतप्टि का कारण थी। किन्त वीमार मा जीवन स अस्तप्ट थी। उस बटिया क ब्याह की चिन्ता खाए जाती थी दिन रात। मा क वीमार हान पर परनी चाची आटा गथ दती थी आर अनीता तदर स राटिया लगवा लाती थी। साथ ही काली दाल भी वही स खरीद लाती थी। क्या स्वाद आता था कि आज भी उस याद करक मयक क मह मलार टपक पडती थी। कभी कभार शादी ब्याह म फला क टाकर भजन स अच्छी कमाई हान पर पिताजी तदर स मीट या मर्गा ल आत थ फिर ता सार आहात म शान स खाना हाता था। एस म मयक का पस दन की ता कही लश मात्र सभावना भी नही थी परिवार म।

वीरू एक म्यजिक गप म डम बजाता था। गप क सचालक मि कपर स वीरू की अच्छी दास्ती थी। मयक भी कभी कभी वीरू क साथ वहा जाता था मि कपर न वीरू की जिम्बवारी पर मयक क लिए टिकट क पस सद पर द दिएथ जा कि मयक न सबसे पहल अदा किए थ वीरू की इज्जत का मान रखन क लिए।

वीजा मिलन पर मयक न झनक का वताया ता वा मयक क विछडन क ख्याल मात्र स तडप उठी थी। साध्य क झटपट स रात की गहराती कालिमा म भी व एक दसर स लिपट आस वहात रह थ। झनक स किया वायदा उसन निभाया था वापिस जाकर। झनक क माता पिता स उसन इतना वायदा लिया था कि व उसका इतजार करग व उन्हान भी मयक का मान रखा था।

सनहर भविष्य क ढरा ख्वाव सजाए जव वा अमरिका क लिए उड चला था ता य पतीत हाता था जस वा काई वी आई पी वन गया था। धीरन न्यर्याक क ज एफ क हवाई अड्ड पर उसकी राह दख रहा था। फिल्म म दखा हआ न्यर्याक वास्तविकता म बहत सदर दिख रहा था। यहा की गगनचम्बी इमारत व अट्टलिकाए दखकर वा विस्मय व हर्ष स भर उठा था। क्वीन्स क एक छोट स रस्तरा म पच्चीस डाल का खाना व वीस डालर टक्सी का विल धीरन द्वारा दन पर मयक मन ही मन डालरा का रूपया म गिनकर धीरन क पति कृतज्ञता स भर उठा था।

वहा स पदल ही वा उस अपन भीड भर कमर म लाया ता मयक का लगा उसक स्वप्न टटकर विखर गए थ। वहा पाच भारतीय लडक आर भी रहत थ। वही जमीन पर सब साए हए थ। मयक का भी नया सटकस एक कान म रखकर धीरन उस चपक स बाहर ल आया व बताया कि अनाथ हान क कारण उस की मासी न उस अमरिका वला ता लिया था किन्त फिर पल्ला छडा लिया था। व भी कठिनाई स अपना खर्चा परा करत थ। धीरन कवल पति शनिवार रात उनक पास घर का खाना खान जाता था। उसन बताया कि कमर म साए य भारतीय लडक पाफशनल्स ह। फिलहाल जा काम मिलता ह वही करक गजारा कर रह ह। कल की कल दखी जाएगी। वस यही यहा की वास्तविकता ह।

इतने कडवी सच्चाई मयक क गल नही उतर रही थी। उसक विचारा म ता अमरिका म रहन वाला क ढाठ ही निराल हात ह व भारत आन पर तभी ता ढरा गहन कपड आदि खरीदत ह। उनक पास बडी बडी कार व काठिया हाती ह। लकिन मालम हआ कि वहद लगन महनत व मकदूर स ही इस मकाम तक पहचा जा सकता ह। तभी अमरिका आपक स्वप्न भी पर करता ह। अगल दिन धीरन वस स उस अपन काम पर साथ ल गया। मनजर न बताया कि टरिस्ट का काम करना गरकाननी ह अमरिका म। उस कही काम नही मिल रहा था। करीव दस दिना वाद एक गजराती रस्तरा क राकी पटल न उस आधी पगार पर काम द दिया। सवह का नाश्ता व सध्या समय चाय या काफी भी मिलती थी वही स। कछ ही दिना म अपनी लगन व महनत स मयक न राकी का दिल जीत लिया था। वा अन्तर्राष्ट्रीय डाइविंग लायसस बनवा लाया था। वा पटल की गाडी लजाकर रस्तरा की गासरी फ़्लाघ सामगी/ भी खरीद लाता था। मयक परी तन्खाह वचा लता था। ऊपर स जा टिप मिलती थी उसस वा भारत फान कर क उन स झट मठ बताता था कि वा वड मज स ह।

पटल का मयक न प्यार सवा व कार्य कशलता की डार स वाध लिया था। छः महीन वीतन पर उसन भारत वापिस जाना था पटल न उस दाबारा अपन पास बलान क लिए काम का पत्र द दिया था। उसी पत्र क आधार पर वा पनः अमरिका आ गया था। भारत वापिस जाकर उसन वीरूका कर्ज उतारा इनक स शादी की व पिताजी का भी पस दिए थ। उसक आन क एक वर्ष वाद इनक भी गनगन का लकर उसक पास आ गई थी। अपन स्वप्न साकार दखकर मयक का स्वय स ईर्ष्या हा रही थी। उस एक वर्ष म धीरन क साथ मिलकर दाना दास्ता न बकरी खाल ली थी। धीरन बकरी सभालता था। इनक क आन क पर्व ही मयक न एक कमर का घर भी ल लिया था। दाना क बचपन की दास्ती दख सब साझाकरत करत पक्की हा चकी थी। धीरन का भी अपना कहान का मयक का परिवार साथ था। रात का दाना इकठ्ठु खाना खात थ व इनक क हाथ का खाना खाकर दाना उगलिया चाटत रह जात थ। गनगन की हसी व बाल सलभ अटखलिया न मयक का जीवन इन्दधनपी रगा स भर दिया उसन भी एक सकण्ड हड हीरा सिविक कार ल ली। धीरन भी गनगन स थाडी दर खलन क वाद उस सलाकर ही जाता था। मयक की जीवन की गाडी अब दाड चली थी रफ्तार लन का।

भारत म मयक क पिताजी अब सिर उठा कर गर्व स चलत थ। भाई अमरिका म हान स अनिता का रिश्ता भी बढिया मिल गया था। मयक क पस आन स मा की विमारी भी ठीक हा गई थी। अपनी हसियत स बढकर अनिता की शादी की थी मयक न। गनगन का बवी सीटर क पास छाडकर इनक न भी काम करना पारम्भ कर दिया था। जव उस स्कल भजन का समय आया ता ज्ञात हआ इनक पनः मा बन रही थी।

अबकी बार वा अमरिका म मयक क पास थी। मयक उसक खान पीन का परा ध्यान रखता था। पटल की वीवी मीरा वन उस यहा की बात समझाती थी। इन वर्षा म इनक न अमरिका की भाषा रहन सहन सब अच्छ स सीख लिया था। हसत खलत समय अवाध गति स वीत रहा था। नवपाण क आगमन की पतीक्षा थी अब ता। मयक मस्ती स सीटी म धन वजात हए जव भी कार की स्पीड बढाता ता इनक उस टाक देती थी।

इनक हाथ धा कर धीरन क पीछ पडी थी कि अब वा भी शादी कर ल। धीरन मयक स आय म चार वर्ष छाटा था पर डील डाल म एकदम उस जसा था। वा सदा ही काम म व मयक क परिवार म व्यस्त रहता था। अपन लिए लडकी ढढन का उसक पास समय ही कहा था। मासी भी वस शनिवार का आपचारिकता निभा देती थी। धीरन बात का हसी म टाल देता था।

इनक की डिलीवरी का समय करीव आ गयाथा। तभी पटल न इस रस्तरा का मनजर मयक का बना दिया व स्वय दसरा रस्तरा खाल लिया। मयक का पतीत हआ माना आन वाला नन्हा जीव उसक जीवन म खशिया की बहार ला रहा ह। बरखा की रिमझिम फहार पर जस मयर झम कर नाच उठता ह वस ही उसका सर्पण अस्तित्व झम उठा। मयक न इनक स कहा बूटा पदा हआ ता उसका नाम फ़ायर/आर यदि पनः बटी आई ता उसका नाम फ़्रिमझिम/रखगर्झनक उसकी रस भरी वाता पर मकरा भर दी थी। उसकी मीठी कल्पना म खा गई थी भविष्य की सखद तस्वीर लिए। मयक का पान क वाद वा ता अपना मायका भी भल गई थी। उसका आदि मयक था ता अत भी मयक ही था अब।

समय पर इनक की नार्मल डिलीवरी हुई। आस म भीगी मलायम काया लिए रिमझिम उनक जीवन म पधारी। गाल मटाल अति सदर बच्ची थी। इतनी सदर बटिया पाकर मयक क पाव धरती पर नही पड रह थ पसन्ता क मार। अगल ही दिन सध्या क चार बज इनक व रिमझिम का घर ल जाना था। मयक न अगल दिन साथ वाली सीट पर बल्ट लगाकर गनगन का बठाया व दाडा ली कार। उसकी साच पनः अतीत म गात लगान लगी थी आर उसका पाव एक्सीलटर पर दबाव बढाता जा रहा था।

यही स ता हमन कहानी पारम्भ की थी।

स्वय पर गर्वित हात हए उस हाश ही कहा था। अपन आप म गम उसन दखा नही कि सामन का टक लाल बत्ती क कारण रूक रहा ह। उसन विन साच तज कार टक म जा मारी। पल म क्या स क्या हा गया। चारा आर स नीली राशनी विखरती सायरन बजाती पलिस की गाडिया दाडी मयक की आर। उसकी सफद कार स लाल रक्त की धार वह रही थी। कार सामन स पिचक गई थी मयक का पार्थिव शरीर स्टीयरिंग व्हील क पीछ फसा हआ था। अलवत्ता गनगन दाई आर बहाश पडी थी उसकी सास चल रही थी। मयक अकला ही जा चका था बहत दऽऽऽऽ र

धीरन का फान पहचा वा अविश्वास स भरा जव वहा पहचा ता उसका यार जा चका था उस छाडकर। उधर इनक हर पल मयक की राह बडी वसवी स तक रही थी घर जान क लिए। वा बार बार रिसप्शन स घर का फान मिलती वहा काई था ही नही ता फान कान उठाता। जव साध्य का धधलका भी रात्रि की वाहा म समान लगा ता उसकी व्यगता बढ गई। वर विचारा न उस पर हावी हाना चाहा ता पलका क पहरी आसआ की वाड का

राक नही पाए आर वग स वह निकल । आज उस दवी दवताआ की मन्त मन्ताती करनी भी आ गई थी । वा ता पर्णरूपण मयक पर निर्भर थी । वही उनका अवलम्ब था ।

एक्सीडेंट स सबधित सार कार्य निपटान म रात्रि घिर चली थी । पटल का वही छाडकर कवल धीरन ही इनक का लिवान अस्पताल पहचा । इनक हरान हा धीरन स मयक क न आन का कारण व कशलक्षम पछ रही थी साथ ही आस वहा रही थी । धीरन न धर्यपर्वक उस चलन का कहा व वाला उस काम था उसन मझ कहा था तम्ह लिवान का । काम म दर हा गई सारीः

धीरन ख्याला म खाया चपचाप कार चला रहा था । उधर इनक उसका पीला पडा चहरा पढन का विफल पयत्न कर रही थी । वा वाली कछ नही वस सिसकती रही थीम थीम । घर म कदम रखत ही उस अपनी जान पहचान क सभी चहर दिखाई दिए । उस य पतीत हआ माना उसका व रिमझिम का स्वागत करन का मयक न सरपराईज दिया ह उसका । उसकी जान म जान आई । उसन वरवस अपन हाठा पर मस्कराहट विखरन का यत्न किया पर उस की दृष्टि चारा आर मयक व गनगन का खाजन लगी । तभी एम्बलस का सायरन बजा सभी उठकर बाहर भाग मीरावन न उसक हाथा स रिमझिम का उठा लिया । धीरन की मासी मिसस सन मिसस गप्ताआदि उठकर उसक करीब आ गई ।

सर्वपथम धीरन गनगन का उठाए भीतर आया इनक न पम विट्वल हा गनगन का चमना आरम्भ कर दिया । तभी पटल आदि सबलाग स्टचर पर श्वत चादर स ढकी एक लाश लाकर भीतर जमीन पर रखन लग । इनक एक क्षण का भयभीत हा गई । चहर पर स चादर हटत ही वहा मयक का रक्तरजित चहरा दखकर इनक एक चीख मारकर फ्रहीSSSSका स्वर उच्चारती मयक क पार्थिव शरीर पर गिर कर मर्छित हा गई । गनगन भी मामा पापा बालकर विलख रही थी व मा क शरीर स लिपटी जा रही थी । एसा हृदय विदारक दृश्य दखकर कान नही पसीजता । हानी का एसा नगा नाच दखकर सभी फट फटकर रा रह थ । सब पत्यक्ष था किन्त किसी का विश्वास नही हा पा रहा था ।

दाना क परिवारा का भारत म खबर दी गई । व सब भी वरी तरह स रा रह थ । एक ही रट थी कि इनक का दाना वटिया क साथ भारत भज दा । धीरन न वास्तविकता का समझत हए स्वय ही वर्तमान स जझन का सकल्प लिया । पटल न हिन्द सासाइटी वाला का सचित कर दिया था । अगल दिन शनिवार था श्मशान म जब लकडी क कफन वाक्स म मयक का सजाकर नया काला सट टाई पहनाकर फला स सजाकर वहा रखा गया ता पतीत हाता था वा अभी उठकर चल दगा । इनक पर ता कहर टटा था वा पापाण पतिमा वनी सनी आख लिए शन्य म तक रही थी । वहा गायत्री मत्र या शिवस्त्रात पढ जा रह थ उस कछ ज्ञात नही था । जब मयक का विजली क अग्निकड म अर्पित किया जा रहा था ता उन तीन निरीह जाना का दखकर अजनबी भी आस वहा रह थ । लेकिन इनक थी इक मक दृष्णता ।

उजडी बहार दामन म समट कर वा एक चलती फिरती लाश वन चकी थी । समय अव समय ही उसक घाव भरगा सब जानत थ । मीरावन धीरन की मासी आदि न चालीस दिन तक इनक का परा ध्यान रखा । अभी वा काम करन याग्य नही थी । उधर धीरन स्वय का उन स वधा पाता था । उनका परा ध्यान रखना वा अपना नतिक उत्तरदायित्व समझता था । उनक सख का वा साथी था ता दख भी ता उसी न साझा करना था न । आखीर मयक उसक वचपन का साथी उसका एकमात्र दास्त था यहा पर ।

एक दा माह वीतन पर हिम्मत जटाकर एक दिन धीरन न इनक स भारत वापिस जान क विषय म पछा । गहन गभीर सी इनक न उत्तर दिया कि वा दाना वटिया क साथ यही अमरिका म ही रहगी । भारत म ता कोई भी एसा श्मचितक नही ह जा पलक विछाए उनकी वाट जाह रहा हा । ससराल वाला का कवल मयक का पसा चाहिए व मायक म कोई उन तीना का खर्चा नही उठा सकता । अव वा स्वय ही कोई नाकरी करगी । यह सनकर धीरन अवाक् रह गया ।

इनक की अभी उम ही क्या थी । उसका दृढनिश्चय व वटिया क पति कर्त्तव्य पालन की क्षमता व निष्ठा दखकर उस इनक पर गर्व हआ । वा मयक क विछाह म टटकर विखरी नही थी वरन दृढ सकल्प हा गई थी । लार्ह परूप सा फसला लिया था उसन । धीरन भी उसका साथ दन का उत्साह स भर उठा । वा पतिदिन काम क पश्चात् पहल की तरह ही उनक पास आता । घन जगल सा सन्नाटा व उदासी उसक आन स छट जाती । वा रिमझिम स खलता उस हसाता गनगन का हामवर्क कराता फिर चाकलट आर आईसकीम खिलान ल जाता साथ ही घर का जरूरी सामान भी लाकर रख दता था । हा इनक स्वचलित मशीन सी खाना बनाती व रख देती थी । न वा हसती न बालती न ही नजर उठाकर दखती धीरन का भी मयक की कमी खब खटकती थी ।

एक बार धीरन आया ता दखता ह इनक वच्चा क साथ लटी दर्द स कराह रही ह । उस बहत तज बखार था ; धीरन न आगहपर्वक उस दवा आर चाय बनाकर दी । वच्चा का भी कछ खिलाया पिलाया । उस रात फिर वा वही रह गया व साफ पर ही सा गया । पात : आख खलन पर दखता ह कि उस पर कम्बल डला हआ था । उस कछ सखद सा लगा । दस माह की रिमझिम आजकल दाता क निकलन क कारण वीमार चल रही थी । इनक क चहर पर भी वचनी भरी थकान चल रही थी । तज बखार क कारण उसक माथ पर इनक वर्फ क पानी की पट्टिया रख रही थी । धीरन न उस थाडा आराम करन का सान भज दिया । पा फट जब इनक की आख खली , ता क्या दखती ह ,, धीरन अति तन्मयता स रिमझिम की पट्टिया तमाम रात स कर रहा था । व अव उसका बखार उतरन पर मस्करा कर दख रहा था ।

जिस लगन आर पम स वा दाना वच्चिया का उनक पिता की कमी नही महससन दता था, उसस इनक बखबर नही थी । उसक रान व गम का कम करन क लिए भी ता एक ही कथा था धीरन का ,, फिर भी एक दिन उसन धीरन स कह ही दिया कि अव वा दर न कर अपनी जीवर्न सिगिनी ल ही आए । इनक का भी साथ मिल जाएगा ।

इतना सनत ही धीरन न आव दखा न ताव, दाना वच्चिया का दाना बाहा म उठाकर , दाना आर स सीन स लिपटाकर इनक स तपाक स वाला, फ्रमव य दाना ही मरी जिदगी ह । नही रह सकता म इनक विना ,, आर तर्म तम हम तीना की जिदगी हा । इनक अवाक् मह उठाए धीरन की आखा म दृढ विश्वास स परिपूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठा दख रही थी । उस धीरन म एक महान व्यक्ति का स्वरूप दिखाई द रहा था । त्याग की मर्ति या उस क लिए कोई यगावतार् ,,

काई दवशक्ति उस धीरन की आर ढकल रही थी । वा चपचाप उसकी दाना बाहा क मध्य रिक्त स्थान म सिमट गई । उसकी दाना वाजआ न धीरन क ईर्द गिर्द जाकर पीछ स उगलिया फसा कर स्वय का उसस बाध लिया था सदा क लिए ,, वही ठहर जान क लिए ,, ,,